स्थापन दिवस के 25वें वर्ष में प्रवेश
संयम • संस्कार • सन्तुलन

शहर समता

'कर्मक्षेत्र रणभूमि यही है, मानव हो तुम कर्म करो।
कर्म से कभी विमुख न रहना, मन में यह संकल्प करो।'-
उमेश श्रीवास्तव

ISSN- 2581-6128
R.N.I.- UPHIN/2001/3996

(हिंदी साप्ताहिक)

अंक 17 | रविवार, इलाहाबाद, 14 सितंबर 2025 | वर्ष 25

www.shaharsamta.com

मेरी खिड़की का दायरा सीमित है!
जबकि संभावनाएं असीमित,
जैसे मेरी अपेक्षाएं सीमित है!
और आकांक्षाऐ असीमित!

-डॉ साधना शुक्ला

सावित्री देवी स्मृति साहित्य सम्मान जुलाई 2025

डॉक्टर साधना शुक्ला विशेषांक

स्थापन दिवस के 24वें वर्ष में प्रवेश

संयम • संस्कार • सन्तुलन

शहर समता

शोध पत्र

(हिंदी साप्ताहिक)

'कर्मक्षेत्र रणभूमि यही है, मानव हो तुम कर्म करो।
कर्म से कभी विमुख न रहना, मन में यह संकल्प करो।'-
उमेश श्रीवास्तव

संस्थापकः स्व0 कन्हैया लाल,
स्व0 श्रीमती साधना श्रीवास्तव

डॉक्टर साधना शुक्ला विशेषांक

सम्पादकः उमेश चन्द्र श्रीवास्तव

www.shaharsamta.com

अंक 41 | पृष्ठ 19 | वर्ष 24

रविवार, इलाहाबाद, 14 सितंबर 2025

R.N.I.- UPHIN/2001/3996 ISSN- 2581-6128

इस अंक में

1. इस बार डॉक्टर साधना शुक्ला
उमेश श्रीवास्तव
....पृष्ठ 1

2. हमारी सामाजिक और सांस्कृतिक यात्रा
डॉ. साधना शुक्ला
....पृष्ठ 2

3. डॉ. साधना शुक्ला की कविताएं
डॉ. साधना शुक्ला
....पृष्ठ 4

रविवार, इलाहाबाद, 14 सितंबर 2025

इस बार डॉक्टर साधना शुक्ला

कलम हमारी सच-सच लिखती,
कलाम की मैं दीवानी हूँ ।
घर हो बाहर या कोना हो,
लिखती में हरदम कविता।
कविता में सब भाव हमारे,
हृदयों की परिभाषा है।
कह लो चाहे जो भी चाहो,
पर यही मेरी अभिलाषा है।

तो बात हो रही है डॉक्टर साधना शुक्ला की । बचपन से साहित्यिक वातावरण में पली, बड़ी हुई है । लिखने की ललक बचपन से ही थी, पिता-पितामह, सब बड़े विद्वान साहित्यकार थे । ल `खन के साथ-साथ अभिनय कला में भी निपुण डॉक्टर साधना शुक्ला ने एकांकी नाटक लेखन तथा उसका मंचन भी किया है । नाटक निर्देशन, संयोजक डॉक्टर साधना शुक्ला की प्रतिभा बहुमुखी हैं । उनकी कविताओं की बानगी देखिए

पहले बानगी

फिर क्यों करुणा विगलित नयना
मां भर लाए अश्रु चंचल
तुम दीन हीन चिंता में लीन
किस उलझन में अब तक खोई!

दूसरी बानगी

मन से बंधने लगे मनप्रीत के धागे,
यह भी तो मुश्किल है क्या होगा आगे!

तीसरी बानगी

मेरी खिड़की का दायरा सीमित है!
जबकि संभावनाएं असीमित,
जैसे मेरी अपेक्षाएं सीमित है!
और आकांक्षाऐ असीमित!

भोपाल की डॉक्टर साधना शुक्ला को जुलाई माह का सावित्री देवी स्मृति साहित्य सम्मान देते हुए संस्था प्रसन्न है। संस्था आपके सुंदर भविष्य की कामना करता है । अंक कैसा लगा प्रतिक्रिया जरूर दीजिए ।

अंत में

लिखने से सब बात बनेगी ,
लिख डालो सारी बातें ।
जो अनुभव किया आपने ,
लिख डालो सारी सांसे ।

उमेश श्रीवास्तव

हमारी सामाजिक और सांस्कृतिक यात्रा

डॉ. साधना शुक्ला

नमस्कार मित्रों, आज आप सभी के समक्ष अपनी
साहित्यिक सामाजिक और सांस्कृतिक यात्रा को साझा कर रही हूं!

बचपन से ही मेरे परिवार में लिखने पढ़ने का शौक रहा है परिवार के विद्वान हमारे बाबा जी अर्थात हमारे पितामह स्वर्गीय श्री परमसुख तिवारी जी, हमारे ताऊ जी श्री उमाशंकर तिवारी जी, बड़े विद्वान और साहित्यकार रहे!

पितामह संस्कृत अंग्रेजी और हिंदी पर अपना पूर्ण अधिकार रखते थे! सन 1903 में जन्मे हमारे पितामह उसे जमाने के अपने आसपास के इलाके में पहले मिडिल कक्षा उत्तीर्ण थे! मकड़ाई स्टेट के राजा ने उनको हाथी पर बैङ्गाकर घुमाया और उन्हें सम्मानित करके पाङ्गशाला निर्माण करके प्रधानाचार्य भी बना दिया! गांव में फिर पोस्ट ऑफिस घर में खोलने की अनुमति दी पोस्ट मास्टर बनाया!

उन्होंने स्वतंत्रता संग्राम में भाग लिया 19 दिन जेल में भी रहे! अंग्रेजी सरकार के खिलाफ पत्राचार किया करते थे हस्तलिखित!

मैंने सबसे पहले कविता जब मैं चौथी क्लास में पढ़ती थी लिखकर बाबा को दिखाई घर के पास में ही दैनिक जागरण प्रेस उन दिनों में नूर महल में था! मुझे साथ लेकर गए और संपादक महोदय से कहा कि यह हमारी पोती साधना ने लिखी है! कुछ समय मैं जो की साधना तिवारी थी, उसके बाद बीच-बीच में जो भी लिखती थी बाबा को दिखा दिया करती थी!

विश्वविद्यालय प्रतियोगिता में मेरे लिखे हुए गीत को प्रथम पुरस्कार मिला! अंतर महाविद्यालय प्रतियोगिताओं में तत्कालीन भाषण, निबंध, कहानी प्रतियोगिताओं की अतिरिक्त नाट्य मंचन रंगमंच भी मुझे अति रुचिकर लगता है! आज भी नाटक लिखना और उनका मंचन करना, निर्देशन करना मुझे अच्छा लगता है!

विवाह के पश्चात मेरा पद अर्पण शुक्ला परिवार में हुआ ईश्वर की कृपा से यहां भी लिखने पढ़ने वाले मेरे परिजन मिले! मेरे पतिदेव आ शरद चंद शुक्ला जी इलाहाबाद यूनिवर्सिटी के पढ़े हुए साथ में तीन-तीन विषयों मे गोल्ड मेडल हिंदी, इंग्लिश, संस्कृत, पढ़ाई कब भरपूर वातावरण मिला! धीरे-धीरे लेखनी चलती रही!

आज से नहीं कई दशकों से साक्षर हों या निराक्षर दृश्य श्रव्य विधा चाहे रामलीला ,रासलीला, धार्मिक आख्यान, व्याख्यान माला ऐसे आयोजन हैं! अधिक से अधिक दर्शकों की उपस्थिति रहती है! इन्हीं मंचों से संस्कृति ,सभ्यता , परंपरा ,रीति रिवाज सामाजिक कुरीतियों पर भी प्रकाश डाला जाता है!

आप सभी की प्रेरणा , प्रोत्साहन, सराहना ने आत्मविश्वास को जगाया है! आपका स्नेह आत्मीय सम्मान नई शक्ति नई ऊर्जा और कुछ नवाचार करने के साथ-साथ रंग कर्म से जुड़े रहने के लिए सदैव प्रेरित करता है!

अभिनय कला ने मुझको बचपन से ही आकर्षित किया है ! एकांकी नाट्य लेखन के साथ-साथ उनका मंचन निर्देशन और संयोजन कार्यों को पूरी ईमानदारी और निष्ठा के साथ संपन्न कराने में सफल रही हूं!

संदेश ,नैतिक शिक्षा , नैतिक मूल्य के साथ ऐतिहासिक जानकारी , सामाजिक सरोकार , आध्यात्मिक और बौद्धिक ,भौतिकता एवं कला संस्कृति से परिचित कराने के लिए! नाट्य मंचन, दृश्य ,श्रव्य ,प्रत्यक्ष संवाद, संप्रेषण दर्शकों को केवल बांध कर नहीं रखता, बल्कि सोचने समझने के लिए बाध्य भी करता है!

भारत मां और जननी से प्रश्न और उत्तर करती हैं!

फिर क्यों करुणा विगलित नयना
मां भर लाए अश्रु चंचल
तुम दीन हीन चिंता में लीन
किस उलझन में अब तक खोई!

काव्य की धारा अपनी रवानी में ऐसे बहती है!

युग तक पथराई पलकों में
नेह मिलन अभिलाषा जागी
मैंने अपने स्वप्न गीत में
एक अनुरागी भाषा मांगी!

स्नेह गाता है ,गुनगुनाता हैं ,रस बरसाता है! प्रिय पीड़ा कविताओं का मुख्य भाव रहता है! अमूर्त प्रियतम की साकार छवि का आभास है! स्वयंवरा का ज्योतिर्मय आगमन रोम रोम को हर्षित करता जीवन को उपकृत करता! प्रतिकूल परिस्थितियों को अनुकूल बनाना और सबल और जीवंत बने रहना, इच्छा शक्ति से हम नए संसार को रच सकते हैं!

शहर समता

डॉ. साधना शुक्ला की कविताएं

जीवन की मुस्कान

जीवन की मुस्कान जरूरी है,
मूलभूत यह ज्ञान जरूरी है!

भला बुरा तो सब में है मौजूद,
सबको हो सम्मान जरूरी है!

डर-डर कर जीना बेमानी है,
जिंदा हो तो जान जरूरी है!

सच यह है कि सब तो अपने हैं,
किसी का क्यों अपमान जरूरी है

धरती पर तो सब चल लेते हैं,
उड़ने को आसमान जरूरी है!

अन्यायी का उत्तर देने को,
तीखी रहे जुबान जरूरी है!

मंथन में गर अमृत पाना हो,
किसी का तो विषपान जरूरी है!

जीवन को कविता सा बहने दो,
अच्छा एक उनवान जरूरी है!

मनप्रीत के धागे

मन से बंधने लगे मनप्रीत के धागे,
यह भी तो मुश्किल है क्या होगा आगे!

धागों में यह जकड़ेगा या होगी मुक्ति,
मन का क्या भरोसा सब छूट के भागे!

धागों की गिरह लगी उड़ना हो मुश्किल,
अपनी आजादी भी रखना है अविरल!

उलझन है यह अपनी कैसे समझाऊँ,
स्थिर हो चित्त और हृदय बने विकल!

प्रीत के यह धागे फिर भी खींच लेते हैं,
चाहे या ना चाहे फिर भी भींच लेते हैं!

हो गया उग आते हैं अंकुर,
चाहे जमीन हो कितनी बंजर!

अपनी नमी से यह खुद को खींच लेते हैं!
आज का सच है यह जाने कल क्या होगा
उलझन गहरी है क्या इनका हल होगा!

आज तो खुश हो प्रीत की रीत है
अस्तित्व देखेगी यह दखल क्या होगा!

प्रतिबिंब

प्रतिबिंब देखने को जरूरी है एक बिंब,
और बिंब देखने को भी एक दृष्टि चाहिए!

दृष्टा बिना अधूरी रहेगी हर एक दृष्टि,
दृष्टा को भी रहने के लिए चाहिए एक सृष्टि !

प्रतिबिंब हो सच्चे यह जरूरी तो नहीं है,
देखो करीब से कहीं दूरी तो नहीं है!
छाया सदा चलती है हमसे जरा आगे,
पर ध्यान से देखो यह अधूरी तो नहीं है!

हों एक से अनेक यह प्रतिबिंब है बताता,

एक शीश महल में कई चेहरे दिखाता!

जो कर सके पहचान असल की वह असल है
अपने को ले पहचान वही व्यक्ति सफल है!

बावरे नयन

जबसे हैं नैन मिले साँवरे
रो-रो के नैन हुए बावरे!

जबसे मिले नैना मोहे ना चैन है
हरपल बिकल मेरे सारे दिन रैन है!

बैरी हुआ है सारा गाँव रे
रो-रो के नैन हुए बावरे!

नदिया ना भावे मोहे पनघट ना भावे
साजन के आवन की कोई खबर लावे!

भावे ना पीपल की छाँव रे!
रो-रो के नैन हुए बावरे!

गलियों में ढूंढा चौबारे में ढूंढा
चौक बाजारों से पता तेरा पूछा!

ढूंढ-ढूंढ थके मेरे पाँव रे
रो-रो के नैन हुए बावरे!

नाम ना जानूं ,तेरा देश ना जानूं,
कैसे मैं भेजूं संदेश ना जानूं!

उल्टा पड़ा मेरा दाँव रे
रो-रो के नैन हुए बावरे!

बावरे नैन तेरा रास्ता निहारें
दिल की हर धड़कन में तुझको पुकारें!

आके पार लगा मेरी नाव रे
रो-रो के नैन हुए बावरे!

जबसे हैं नैन मिले साँवरे
रो-रो के नैन हुए बावरे!

गाँव की गोरी

गोरी-गोरी गाँव की गोरी है,
किसी कच्चे नीम की निंबोरी है!

किसी आशंका का साया भी नहीं
अब तक कोई मन भाया ही नहीं!

न कोई खटका है
न कहीं मन अटका है!

दिल पे किसी दुख की छाया नहीं
रस भरे गन्ने की पोरी है!

गोरी-गोरी गाँव की गोरी है!

कभी रिश्तों की गर्मी है कभी यह पीर पराई है,
कभी आंचल की ठंडक है कभी बहती पुरवाई है!

नदी में तैरना है झरने सा बहना है
ऊंचे बादल सी उड़ती है नहीं कोई खाई है!

जाने किस चाँद की चकोरी है
गोरी-गोरी गाँव की गोरी है!

सपनों का झूला है जोर से हिलाना मत
सोई है सहजता में उसको जगाना मत!

कितनी सुंदर है यह अपनी अल्हड़ता में,
नहीं समझ पाएगी इसको बताना मत!

कच्चे से धागों की बिना बुनी झोरी है
गोरी-गोरी गाँव की गोरी है!

रंगों की बहार

आया होली का त्योहार छाई रंगों की बहार!
पिया आ के तू रंग लगा जा!

पड़े रंगों की फुहार, भीगे तन मन हमार!
तू भी आ के रंगों में नहा जा!

गोरे गोरे हाथों में हरी पीली चूड़ियाँ,
पेड़ों पे चहके जैसे चिड़िया!

टेसू पर ज्यों अगनी दहके,
मन में पीली सरसों महके!

माथे पर सिंदूरी लाली,
पीकर भांग हुई मतवाली!

छटा है मेरी सतरंगी,
तो बन जा तू भी हुड़दंगी!

हर रंग के रंग लगा जा!
आया होली का त्योहार तू भी आजा!

मोहे आके तू रंग लगा जा
छाई रंगों की बहार!

मनचाहा

मनचाहा कब होता है, ऐसा सब ही मानते हैं
मनचाहा सब होता है, ऐसा अभी कुछ ही जानते हैं!

चाहने व देखने का दृष्टिकोण मुश्किल तो है
बदलना, मगर परिश्रम से कुछ भी संभव है!

चमत्कार नहीं तो उससे कम भी नहीं,
अगर दिव्यांग खिलाड़ी पैरालंपिक में जाते भी हैं,
और मेडल्स की झड़ी लगाते भी हैं!

हम उनके साहस व आत्मविश्वास से चकित,
उनकी कहानियाँ सुनते व सुनाते भी हैं!

चाहना शिद्दत से हो यह जरूरी है,
मानना पूरी चाहत से हो यह भी जरूरी है!

सफलता आज नहीं तो कल मिलेगी ही,
प्रयास और परिश्रम ऊपर वाले की मंजूरी है!
फिर भी चुप बैठना कहां जरूरी है

गाँव में बदलाव

बदला समय तो रीत गया
गाँव का गौरव!
शहरीकरण से लुट सा गया
गाँव का गौरव!

अब भी वही है पेड़
वही है चबूतरे
चौपालों के उस दौर में
रहते भरे भरे!

दारु की दुकान खुली
जब से गाँव में
पेड़ों के नीचे बैठते हैं
अब डरे डरे!

विकास की कीमत में बिका
गाँव का गौरव!
बदला समय तो रीत गया
गाँव का गौरव!

दिखते थे दीवारों पे
उकेरे हुए शुभ चिन्ह,
स्वास्तिक फूल और पत्तियां
हनुमान और नरसिंह,
अब है वहाँ चुनाव चिन्ह
और नारे लिखे हुए!

अखबार बातचीत की
राजनीति से भरे
नेतागिरी ने लूट लिया!
गाँव का गौरव
बदला समय तो रीत गया!

गाँव का गौरव
आल्हा रही न फाग
ना चौपाइयां रही
अब ना रहे वे बाग,
ना अमराईयां रही
खग अभी भी बोलते हैं!

सूनी रात में
होते हैं मुकदमे भी,
यहाँ बात बात में
अब क्या कहूँ, मै छिन गया
गाँव का गौरव!

बदला समय तो रीत गया
गाँव का गौरव
देखा था खुद उसे कभी
सपना नहीं लगता,
अब अपना गाँव भी मुझे
अपना नहीं लगता!

अब कोई नहीं जो मुझे
मुड़कर पुकार ले
मन मेरा भीग जाए
कुछ ऐसा दुलार दे!

लौटायेगा कोई क्या
मेरे गाँव का गौरव!
बदला समय तो रीत गया
गाँव का गौरव!

युद्ध व जीवन

युद्ध व जीवन एक पर्याय है,
जो जिंदा है लड़ता है!
जो नहीं लड़ता वह मृतप्रायः है,
किसी के लिए जीवन में युद्ध है!

किसी के लिए युद्ध ही जीवन है,
कोई-कोई युद्ध देखता प्रबुद्ध है!

युद्ध देख कर भी चुप रहने से,
युद्ध से बचा नहीं जा सकता!
समय आने पर सब को लड़ना ही होगा!

युद्ध है समय की अवश्यंभावी आवश्यकता,
युद्ध सब बाहर रणक्षेत्र में ही नहीं होते,
अंतर्मन में भी अंतर्द्वन्द होते हैं!

घायल व मृत शरीर ही नहीं होते,
मन मस्तिष्क भी छलनी होते हैं!

युद्ध सदा अनायास तो नहीं होता,
वर्चस्व और महत्व में भी इच्छा प्रेरित करती है!

कभी पराए युद्ध में भी कूदना पड़ता है,
तभी शक्ति प्रदर्शन की इच्छा दंभ भरती है!

एक तरह से देखो तो सब मोर्चे पर हैं,
सीमित संसाधन लेकर भी सनद्ध हैं !
जीवित हो तो लड़ना ही पड़ेगा,
एक अभिशाप से सभी तो आबद्ध है!

क्या कोई समय होगा जब युद्ध नहीं होंगे,
प्रसन्नता में डूबे व्यक्ति क्रुद्ध नहीं होंगे!

शांति व संतुष्टि जगत व्यापी होगी,
शोणित स्नान से तब शुद्ध नहीं होंगे!

हमारा मध्य प्रदेश

पचमढ़ी सतपुड़ा की रानी
ढेर सारे वाटरफॉल झरने,

बहते ऊँचे चौरागढ़ पर बैठे बम भोले
बड़े महादेव पांडवों की गुफा

नाग गिरी सुंदर अट्टालिकाएं
सुंदर प्रकृति हरा भरा वन्य पथ!

अमरकंटक नर्मदा का उद्गम
भिलाई स्टील का प्लांट!

नर्मदा तट पर ओंकारेश्वर ज्योतिर्लिंग
शिप्रा तट पर महाकाल बिराजे!

इंदौर अहिल्याबाई होलकर,
ग्वालियर सिंधिया का किला!

कालिदास महान कविवर
तानसेन बने सुर सम्राट!

जबलपुर भेड़ाघाट धुआंधार
बंदर कूदनी मदन महल जो है!

सांची का स्तूप बना है,
बौद्ध धर्म की शान अनोखी!

उदयगिरि मंदिरों की श्रृंखला
बांधवगढ़ ,कान्हा ,पेंच सतपुड़ा नेशनल पार्क!

कूनो नेशनल पार्क, पन्ना टाइगर स्ट्रीट,
नर्मदा परिक्रमा सुंदर पवित्र घाट!

भोजपुर भीमबेटका भित्ति चित्रों का इतिहास,
खजुराहो मूर्ति कला मांडव गढ़!

लक्ष्मीबाई दुर्गावती बनी महान,
पन्ना हीरों की बड़ी खदान!

कोल माइंस का काला सोना
मध्य प्रदेश का शरबती गेहूं!

बना हुआ है खासमखास,
ताल तलैया का शहर भोपाल!

भोपाल बना है राजधानी
संचालित गतिविधियां अपार!

नारी और स्वतंत्रता

नारी और स्वतंत्रता बड़ा विरोधाभास!
किसी धर्म का है नहीं इसमें कुछ विश्वास!

पूजा कर सकते मगर देते नहीं यह श्रेय पिता!
पति और पुत्र ही समझा करो वरेण्य!

नेता भी नारे लगा पूर्ण करें कर्तव्य!
संसद पढ़े विधान का क्या होगा भविष्य!

आंदोलन जीवी सदा लेते इसका नाम!
खुद उनके घर में नहीं आता है यह काम!

चर्चा है साहित्य में कविता बनती खूब!
वाह-वाह के शोर में सब जाता है डूब!

स्वयं खड़ी हों नारियां तब शायद कुछ होय!
समझौतों के रास्ते पाये न कुछ कोय!

अच्छा यह आदर्श है इसका करिए ध्यान!
अगर अमल में लाइए तभी पूर्ण सम्मान!

अस्मिता को पहचानकर जागे स्वाभिमान!
खुद को कम मत आंकिए यही है सच्चा ज्ञान!

शक्ति स्वरूपा शक्ति को जब लेगी पहचान!
वह क्षण है स्वातंत्र्य का जब इस को लें मान!

जब तक जिंदा था

जब तक जिंदा था
कहाँ पूछ परख थी
दुनिया जहान से जाते ही,
कहने लगे आदमी अच्छा था!
बड़ी जल्दी चला गया!

कभी सोया नहीं चैन से,
जागता रहा नैन से
कहा नहीं बैन से!

किसी ने ना समझा
किसी ने ना जाना!

कभी कुछ कहने की
कोशिश नहीं की
कहता तो क्या समझ जाते?
जालिम जमाने वाले
हंसते मुस्कुराते!

ठहाका लगाने वाले
सरे बाजार मखौल उड़ाने वाले!

कुछ बेचारा लाचार समझकर,
कभी आंखों में अश्रु लाते!
सच्ची झूठी हमदर्दी से
बेचैनी का दिल बहलाते!
दिल तो दिल है कब तक सहलाते!

चाहा मगर चाहत को तरसे!
उड़े गिरे फिर उड़ कर चले,
बिन मंजिल के रास्ते भले!

चलना भी आसान कहाँ था!
कदम बढ़े पर सतरस्ते पर,

बीच भंवर में घूम घूम कर!
चौरासी के फंद छुड़ाते,
लटके त्रिशंकु बनकर,
शंका का समाधान दिखा ना!

खिलता कमल बंद था भंवरा,
खुलकर भागा नींद से जागा!

जागा कहाँ अर्ध निंद्रा में,
सुप्त और चैतन्य के मध्य में,
अपने होने के सबूत में!

और थक कर सो गया अब!

मिला कब था खो गया अब!

खिड़की का दायरा

मेरी खिड़की का दायरा सीमित है!
जबकि संभावनाएं असीमित,
जैसे मेरी अपेक्षाएं सीमित है!
और आकांक्षाऐ असीमित!

इसी खिड़की से झांक कर मैंने,
आसमान देखा है चाँद तारे देखे,
टूटते तारे से दुआऐं माँगी है!

खुशनुमा नजारे देखें है,
कैसे कह दूं कि ये दायरा है!

जबकि ये मेरे दायरे का विस्तार है,
दायरे तो सीमित करते है!
यह तो दायरे में फूटती एक दरार है!

खिड़की से हवा आती है खुशबू आती है!
उम्मीद आती है ,जीने की आरजू आती है!

दायरे के बाहर भी दुनिया है ,पता चलता है!
और उसी दायरे में, जीने को जी मचलता है!

दुनिया में बुराई है और कुछ अच्छाई भी!
दुनिया में वफ़ा भी है, दुनिया हरजाई भी!

दुनिया में जो कुछ है खिड़की दिखाती है!
दायरे से निकलो तुम खिड़की बुलाती है!

मेले में खोई गुजरिया

लहँगा ,लुगड़ा ,और चुनरी
कर पूरा सिंगार सुंदरी
सखियों संग घर से निकली थी,
मेले में खो गई गूजरी!

सज धज कर मेले में पहुँची,
सोच रही ये खड़ी खड़ी
सारे मुझको देख रहे क्यों
करके आँखें बड़ी-बड़ी!

सतरंगी चूनर में अटके
कितने भूले भटके मन
पता नहीं कितने मर्दों में
उसको देख हुई अनबन

मिले कोई जाना पहचाना
उससे मिलकर करूँ सवाल
जहां कहीं से मैं गुजरूं क्यों
मच जाता है एक बवाल!

गुजरी तो भोली भाली है,
उसे कभी बहकाना मत!

निष्कलंक निष्पाप अभी है,
गलत राह दिखलाना मत!

अभिव्यक्ति की वाणी

संवेदना की भाषा है ये,
अभिव्यक्ति की वाणी!
सहोदराओं संग शोभित ये,
है हिंदी महारानी!

हिंदी भाषा प्रेम की भाषा,
इसको गाँव गली समझे,
इसको समझे गोकुल ग्वाले,
बरसाने की लली समझे!

समझे सूर और तुलसी इसको,
समझी मीरा प्रेम दीवानी,
रहिमन और रसखान समझ गए,
हिंदी का नहीं कोई सानी!

दादू धन्ना और रज्जब समझे,
समझे दास कबीरा,
इसको कभी समझ ना पाए,
जिसको नाही पर पीरा!

केशव और रत्नाकर समझे,
समझे इसे बिहारी,
जो समझे वो इसे सजाये,
शोभा अमित निहारी!

भूषण समझे चंद भी समझे,
समझे जगनिक भाट,
फड़क उठी वीरों की भुजाएं,
ऐसा उनका ठाट!

भारतेंदु हरिऔध समझ गए,
समझे इसे जयशंकर,
पंत निराला महादेवी
बन गए इसे अपना कर!

बच्चन नीरज शिशु सरल ने
इसको ही था गाया,
अन्य क्षेत्र के रहने वालों
ने भी इसे अपनाया!

दिल की बोली ,दिल की वाणी ,
दिल ही इसको समझे,
जिसने इसको दिल में बसाया,
वो फिर कहीं ना उलझे!

हिंदी अपनी ,अपना समझो,
अपना इसे बनाओ,
पढ़ो पढ़ाओ कोई भाषा,
हिंदी की जय बोलो!

पत्ते

पत्ते कभी जर्द भी होते हैं,
पत्ते सब्ज भी होते हैं
सच कहें तो पत्ते
पेड़ की सेहत की नब्ज भी होते हैं!

पत्ते पेड़ के लिए
स्वाद भी बनाते हैं, बनाते हैं भोजन भी
झूमती हवाओं में लहरा कर
बढ़ाते हैं पेड़ की शोभन भी!

बात पेड़ की होती है फल की भी
पत्तों की बात कम ही होती है
किसी पत्ते की आँख नम भी होती है!

सूखकर गिर गए पत्ते
जब पवन उड़ा ले जाती है
तब अपना जाया कहाँ गया
पेड़ की सोच में यह बात आती है!

पेड़ और पत्ते का संबंध
कुछ निर्मम है कुछ प्यारा भी
इसमें भी छुपा है कुछ संदेश
शायद है प्रकृति का कुछ इशारा भी!

गर आज झड़े हैं कुछ पत्ते
कल और नए भी आएंगे
ऋतु जाएगी तो आएगी भी
हम और हरे हो जाएंगे!

हिंदी का संसार

तन मन में समाई हुई,
लहर गति बन छाई हुई !
वेदों के उर से उपजी तुम
जनमानस को भाई तुम!

हिंदी हिंद की गीतिका
बन,,,,,,,,!

आंखों की दिव्य दृष्टि सी,
रूपसी राधिका गोरी सी!
गाये गुनगुन कंठ प्रिया,
भावों की सरगम तुम सिया!

हिंदी हिंद की गीतिका बनकर,,,,,,,,,!

जिनके रोम रोम में स्पंदन,
हृदय समय श्री चंदन
करुण हृदय की पुकार सुन,
मधुसूदन सुने है गुनगुन!

हिंदी हिंद की गीतिका बनकर,,,,,,,,,,,!

भाषा की विभावरी जगाये,
धीरे-धीरे अस्त्र उड़ाये!
आकृष्ट करती हिरनी सी ,
देखे विश्व को मृगनयनी सी!

हिंदी हिंद की गीतिका बनकर,,,,,,,,,!

लहर लहर ऊपर उड़ती ,
जलधारा में बनती मिटती!
अतिक्रमणी भाषा की प्रति,
तुम संचार की श्रेष्ठ कृति!

हिंदी हिंद की गीतिका बनकर,,,,,,,,,!

बोलियों की मंजूषा थाती,
संग गलबहियां डाले आती!
समायी तुम में कितनी भाषा ,
पर हिंदी सबकी अभिलाषा!

हिंदी हिंद की गीतिका बनकर,,,,,,,,,,!

राष्ट्र प्रेम रस रंग लिये,
बनी सदा ही कंठ प्रिये!
वीरों की जोशीली वाणी
माता शारदा पुस्तक पाणी!

हिंदी हिंद की गीतिका बनकर,,,,,,,,,,,!

ममता वात्सल्य करुण पुकार!
लिये अनेकों अनेक आकार!
हास्य व्यंग राग मल्हार,
गले पहने मोतियन हार!

सब बलियों के अक्ष में हिंदी!
हिंदी हिंद की गीतिका बनकर,,,,,,,,!

पदचाप

वो आया आकर गया
पदचाप सुनाई देती है!
सारा जग सो जाता है,
चुपचाप सुनाई देती है!

वो उन राहों का राही था,
जो आगे आगे जाती है!
मैं ऐसे मोड़ पर ठिठक गई

यादें ही जहाँ रह जाती हैं
पर उन कदमों की गूंज तो अब
दिन-रात सुनाई देती है
वो आया आकर चला गया,
पदचाप सुनाई देती है!

दो चार कदम ही साथ चले,
और साथ हमारा छूट गया!

जिन सपनों की बात की थी
वह सपना भी तो टूट गया!

मिलकर जो था संगीत रचा,
वो थाप सुनाई देती है!

वो आया आकर चला गया,
पदचाप सुनाई देती है!
राही तो अपनी राह गया
पर कुछ है जो वो छोड़ गया!

जीवन जो पहले सादा था,
उस जीवन का रुख मोड़ गया!
जब चाहे सुन लूँ सरगम सी,
आलाप सुनाई देती है,
वो आया आकर गया,
पदचाप सुनाई देती है!

इत्तेफाक

वो भी है और हम भी हैं
इत्तेफाक ये भी है!
वो मेरे सनम भी हैं
इत्तेफाक ये भी है!

इक जमीन पर रहकर
आसमां अलग से है
इक मकान में रहकर
दिल और जान अलग से हैं!
प्यार के भरम भी हैं
इत्तेफाक की ये भी है!

वो मेरे सनम भी हैं
इत्तेफाक ये भी है!
नदी के किनारे से
साथ साथ चलते हैं
या कि बहते धारों से
साथ साथ मचलते हैं
उनके कुछ करम भी हैं
इत्तेफाक ये भी है!

वो मेरे सनम भी हैं
इत्तेफाक ये भी है!

थी दरारें पहले भी
इतनी भी बड़ी न थी
सोच अपनी अपनी थी
पर कोई अड़ी न थी
अब तो बस शरम ही है
इत्तेफाक ये भी है!

वो मेरे सनम भी हैं
इत्तेफाक ये भी है!

रिश्ता टूट जाएगा
डर नहीं था पहले भी
घर बनाने के पहले
कुछ जो रंजोगम भी हैं!
इत्तेफाक ये भी है!

वो मेरे सनम भी हैं
इत्तेफाक ये भी है!

इत्तेफ़ाक से होता
सच में जो भी होता है
कोशिशें तो पर्दा है
आईना डुबाता है
पर आंख जो नम भी है
इत्तेफाक ये भी है!

वो मेरे सनम भी हैं
इत्तेफाक ये भी है!

मैंने न बुलाया था
मैं नहीं बुलाऊंगी
गीत पहले भी गाती थी
गीत अब भी गाऊंगी
सीने में ये दम भी है
इत्तेफाक ये भी है!

वो मेरे सनम भी है
इत्तेफाक ये भी है!

वो भी हैं और हम भी हैं
इत्तेफाक ये भी है!

इंतजार

इंतजार जिसका है
वह कभी न आएगा!
गर कभी वो आया भी
आ के लौट जाएगा!
जो नजर नहीं आता
उसकी ये कशिश कैसी
सोचा भूल जाऊँ मैं
पर नहीं कोशिश वैसी
क्या मेरे इन जख्मों को
वक्त भर भी पाएगा!
इंतजार जिसका है
वह कभी ना आएगा!
जो पहुंच सके उस तक
क्या कोई सदा होगी,
उसके दिल को उलझाये
क्या कोई अदा होगी,
गीत जो मैं गाती हूँ
क्या कभी वह गाएगा।
इंतजार जिसका है
क्या कभी वो आएगा!
क्या वह जागता होगा
यादें सो गई जिसकी,
क्या कभी कोई उसको
रास्ता बताएगा!
इंतजार जिसका है
वह कभी ना आएगा!
इंतजार ही तो बस
अब मेरा सरमाया है
जितना खोया है उसको,
उसको उतना पाया है!
क्या मेरी लगावट को,
वह समझ भी पाएगा
इंतजार जिसका है
वह कभी ना आएगा!
दिन भी याद आते हैं
रातें याद आती हैं!
दफ़अतन मेरे दिल को
आके वह सताती है!
दर्द क्या कभी मेरा
उसका हो भी पाएगा!
इंतजार जिसका है,
वह कभी ना आएगा!
इंतजार जब तक है
आस भी तभी तक है
जब तलक मैं जिंदा हूँ
फांस भी तभी तक है

बाद में जो आएगा!
रो के लौट जाएगा
इंतजार जिसका है
वह कभी तो आएगा!

आँख के सामने

आँख के सामने से नमी नहीं जाती,
जिंदगी है कि जी नहीं जाती!

देखकर उनको हक्का-बक्का रहते हैं,
सांस आती है पर नहीं आती!

बुजुर्गों का लिहाज इतना है,
उनसे आँख मिलाई नहीं जाती!

सहते सहते निकल रहा है दम,
पर शिकायत की नहीं जाती!

सिलसिला है सांसों का सांसों तक,
उनकी यह बेरुखी नहीं जाती!

पहले हँस-हँस के करते थे सितम,
अब इनायत भी की नहीं जाती!

और कितनी लाशों को देखोगे,
क्यों तुम्हारी ठसक नहीं जाती!

तुम मेरे हो के भी मेरे ना हुए,
पीर यह उम्र भर नहीं जाती!

'साधना' मैं ही क्यों करूं शुरुआत,
उनसे क्या बात की नहीं जाती!

क्यों सोचो ना

क्यों घबरा जाते हो तुम,
जरा सी असफलता से,
बढ़ा लेते हो अपनी आकांक्षा,
असीमित ,अपरिमित
क्यों सोचो ना!

अधीन होकर सुख सुविधाओं के,
पंगु बन जाते हो आदतों से,
घेरा बड़ा होता जाता है,
मकड़ जाल सा इर्द- गिर्द,
उलझते जाते हो सुलझाते सुलझाते
क्यों सोचो ना!

बुरा लगता है अंकुश,
कहां भाता है अनुशासन,
स्वतंत्रता स्वच्छंदता में,
कब बदल जाती है
सोचो ना!

उड़ना और उड़ते रहना,
कभी एक जगह ना ठहरना,
दौड़ते दौड़ते हांफ जाना,
ठोकर खाकर पड़े रहना,
इंतजार में कोई हांथ बढ़ाएगा
क्यों सोचो ना!

आएगा कोई मसीहा ,
अगले ही पल जादू की छड़ी से,
बदल देगा भाग्य का लिखा,
हस्त की रेखाओं को
ग्रह नक्षत्र की चाल को
क्यों सोचो ना!

ऐसा कुछ नहीं होगा,
उठो सीना तानकर आगे बढ़ो,

अपने पर विश्वास करो
स्वाभिमान से कदम उठाओ ,
देखो सिर उठाकर
क्यों सच है ना!

गणित

गणित दिवस पर सोच रही हूँ,
जीवन क्या गणित के नियमों पर चलता है!

जोड़ने से क्या जुड़ जाता है,
घटाने से क्या घटित ही फलता है!

फिर क्यों कुछ लोगों का एक और एक दो,
और कुछ लोगों का एक और एक ग्यारह होता है!

कुछ जीरो से आगे ही नहीं बढ़ पाते
और कुछ का तो हमेशा पौ बारह होता है!

क्यों कुछ के हिस्से में जोड़ गुणा आता है,
और कुछ के हिस्से में सिर्फ बाकी और भाग!

फिर याद आया तो शिक्षक जी कहते थे,
सभी का तो होता है अपना अपना भाग!

धनात्मक और ऋणात्मक योग सबके होते हैं,
और सभी अपने अपने वर्गों से बंधे होते हैं!

प्रगति गणित क्रम में हो यह जरूरी नहीं,
और हम जैसे चक्रवृद्धि ब्याज भी देते हैं!

चलो मान लेते है कि समतामूलक समाज है!
पर एक को सौ और सौ को एक कैसे मान लें!

अनेकता में एकता और एकता में अनेकता अच्छी तो है,
पर पहले अपने समाज का सही गणित तो जान लें!

बदला नहीं लेते

बदलते हैं दुश्मन को हम प्यार ही से,
नहीं लेते हैं हम बदला किसी से!

यह माना कि कल तक हम अजनबी थे!
मगर प्यार होता है, क्या अजनबी से!

बुराई का बदला बुराई नहीं है!
भलाई भी क्या कर सकें हम खुशी से!

ना इंसानियत का दिखा कोई जज्बा
वह दिखते थे हमको भी जो आदमी से!

तरसते रहे और लब भी ना खोलें,
शजर सूख जाते हैं जब कमतरी से!

ये है साधना या कि सेवा सुखन की!
मुकाबिल खड़े हैं कि जब हम खुदी से!

हमारी हिंदी की महिमा

हमारी हिंदी की महिमा बड़ी निराली है
बड़ी प्रभावी है बडे. गुण वाली है!

यहां की बोलियों का दिल पे राज होता था!
अवधी ,ब्रज ,भोजपुरी, का रिवाज होता था!
सूर तुलसी कबीर मीरा यहां गाते थे!
प्रभु के गुणगान यहां करते ना अघाते थे !
राजे रजवाड़ों में भी इसकी धार बहती थी!
नैन और सैन में भी प्रेम कथा कहती थी!
इन्हीं सब बोलियों ने भाषा को संवारा है!

रूप को निखारा है, सबसे जो प्यारा है !

देश को जब भी थी जरूरत यहां बलिदानों की!
राष्ट्रभक्ति से जुड़े ओज के तरानों की!
हिंदी से जुड़े लाल तब आगे आए!
श्यामलाल मैथिली शरण और सोहनलाल आये!
बालकृष्ण और बिस्मिल ने भी तराने गाये!
युवा घर छोड़कर समर में तब उतर आये!
देश पर जब भी किसी संकट के बादल छाये!
हिंदी के कवि भी तभी फर्ज निभाने आये!

हिंदी में नारियों का भी सम्मान होता था!
महादेवी और सुभद्रा का ज्ञान होता था!
कृष्णा ,ममता और मैत्रयी इसी में लिखती हैं!
कथा कहानी और उपन्यास में भी दिखती हैं !
शिवानी , मालती ,सूर्यबाला ने संवारा है!
सभी ने हिंदी का चेहरा यहां निखारा है!
नारी सशक्तिकरण बढ़ाता है !
ज्ञान उन्नति के ये सोपान भी चढ़ाता है!

दिनकर निराला हमें अब भी प्रेरणा देते!
और अज्ञेय हमें अब भी चेतना देते!
नये प्रयोगों से हिंदी संवरती है!
नयी विधाओं में भी ये निखरती रहती है!
इसमें आलोचकों का भी स्थान रक्षित है!
नयी पीढ़ी को संवारना भी इनका लक्षित है!
सभी विधाओं में हिंदी सभी से कहती है!
पढ़ो और आगे बढ़ो भावना भी रहती है!

प्रगति के साथ विरासत इसी में संभव है!
ज्ञान के साथ संस्कार इसका उद्भव है!
संयुक्त राष्ट्र में भी अब तो हिंदी गूंजती है!
अनेकों देशों को इसकी पढ़ाई सूझती है !
वर्णमाला भी इसकी सबसे वैज्ञानिक है!
कंप्यूटिंग के लिये ये समस्थानिक है !
देश की एकता की इसमें संभावना है!
और सच पूछो तो ये विश्व गुरु भावना है!

इसीलिए तो हम हिंदी दिवस मनाते हैं!
एक पखवाड़े इसी के ही गीत गाते हैं!
ओ हिंदी प्रेमियों लो अपनी भी आवाज मिला!
तभी तो होगा मातृभाषा का भी कुछ तो भला!
जब हिंदी पाएगी सम्मान जो हक इसका है !
उठाओ हिंदी का झंडा और एक सुर बोलो!
जोर से हिंद की जय और जय हिंदी बोलो!

मेरी उम्र

मेरी उम्र क्या है मेरी उम्र
दस्तावेजों के अलावा लापता है मेरी उम्र
सोचती हूं क्या है मेरी उम्र!

नाती पोतों के साथ खेलती हूँ
पहले भी बेटे बेटियों के साथ खेली थी,
वैसे ही जैसे बचपन में खेलती थी,
पति भी कहते हैं तुम्हारा बचपना अभी गया नहीं!

वैसे ही बात- बेबात हँसती हूँ , रोती हूँ
वैसे ही कभी-कभी अपना आपा खोती हूँ
जब तक मैं ज़िंदा हूँ
बचपन भी ज़िंदा है
इसी के सहारे मेरी जिंदगी ताबिंदा है!

पहले सुघड़ ग्रहणी थी वैसे अभी हूँ!
बड़े आशीर्वाद देते थे , अब भी देते हैं!
अरमानो से घर बनाया था अब भी है!
मेहमान अब भी तारीफ कर देते हैं!
बेटे हैं ,बहुएं हैं, दामाद हैं ,इज्जत है
खुश रहना, खुश रखना ,अपनी तो फितरत है!
काफी कुछ बदला है, फिर भी कुछ बाकी है
अब भी उम्मीदें हैं, अब भी कुछ हसरत है!

सोचने से उम्र का पता कैसे चलेगा!
उम्र के साथ गणित और कमजोर हुआ है!
वैसे त्वचा से तो उम्र का पता नहीं चलता
सोच से उम्र का, वैसे भी नहीं कोई वास्ता
भरपूर जिया है अब भी जी रह हूँ
जिंदगी का घड़ा लबालब है पी रही हूँ
तब भी लिखा करती थी अब भी लिखती हूँ
तब भी दिल दुखता था अब मैं भी दुखती हूँ!

मधु मेरी दोस्त, मत पूछ मेरी उम्र,
उम्र में रखा क्या है?
सार्थक प्रश्न होता है उम्र में चखा क्या है?

तीसरे का इंतजार

वह सीढ़ियों से उतर रहा था,
मैं सीढ़ियों से ऊपर जा रही थी,
उसने कहा सीढ़ियां ऊपर से नीचे जाती हैं,
मैंने कहा सीढ़ियां ऊपर जाती है,
तीसरे ने कहा मनोदशा पर निर्भर है,
सीढ़ियां ना आती है ना जाती है,
जहाँ है वहीं रह जाती है!

पतंग हवा में उड़ रही थी,
डोर दूसरे के हाथ में थी,
उसने कहा पतंग मैं उड़ा रहा हूँ,
मैंने कहा हवा का साथ है,
तीसरे ने कहा डोर बांधे हुए है,
इसलिए ही तो बंधे हो
हवा के बावजूद संतुलन में सधे हो!

हम दोनों देर तक सोचते रहे,
निष्कर्ष तक पहुंचने के लिए,
ये तीसरा क्यों जरूरी है,
तीसरे ने कहा हँस कर
शिव जी के भी तो तीन नेत्र हैं!
यह सृष्टि संतुलन के लिए जरूरी है!

फिर हमने तीसरे को स्थाई भाव मान लिया
और साथ-साथ चलने की कोशिश की!
और लगा संतुलन अब सध गया !

तभी लगा दोनों के बीच तीसरे का क्या काम,
और फिर सब कुछ उलझ गया!

नोकझोंक

पति बोले पत्नी से, क्यों करती हो जग हँसाई
हमने तुम्हें पाया बड़े अरमान की मुँह दिखाई!
अब निकला चाँद में दाग क्या हमें हैं हरजाई
तुम भी तो एक आँख की खिड़की बंद करके आई!
कुछ ना कहा हमने एक आंख भी समदर्शी कहलाए
पत्नी करके मुँह कड़वा चली, पीहर में फोन लगाई!
आए दौड़े भागे मायके से चार-चार भाई एक लिए लाठी दूजा दोनाली तीजा लिए हाथ में बरछा चौथे ने तलवार लहराई घुसकर अंगना भीतर आकर जोर से टेर लगाई
बोलो-बोलो किस दुश्मन ने हमारी बहन सताई
बोलो बहना मुँह से बोलो जीजा ने करी लड़ाई
अपनी बहना के भैरव हम हैं तू माता की जाई!
रखा तुझे है सदा ही लपेट मखमल रजाई
डर मत बहना तू अपनी है नहीं कोई पराई
घर चल जहाँ पली-बढ़ी, की तूने पढ़ाई
बापू के औसारे खेली गुड़िया से चाचा ने की सगाई!
लै जाते बहना को अपनी कोर्ट में होगी सुनवाई
सुन आवाज बहन है दौड़ी हाथ में हलुआ लै आई!
आओ भैया जीजा संग बैठो करो भेंट मिलाई,
यह तो भैया नोकझोंक थी तुम समझे लड़ाई!
रोज करते नोकझोंक खाते रबड़ी मलाई
जीवन बीत रहा है सुख से इन संग प्रीत लगाई!

बसंत की आग पलाश और फाग

जी भर होली खेलिए फागुन के दिन चार
तन-मन शीतल कारिणी है रंगों की धार!

होली में पी की होली में, होली में,
मेरी रंग डारी कुर्ती पीली फागुन में!

जंगल में बसंत की आग है लागी,
पलाश फूल झरे आगी!

मादक गंध पवन संग डोले,
तन-मन में एक आग है जागी!

मारे सखियाँ ताने, बोली होली में
होली में पी की होली में, होली में!

रसिया फूल पलाश के लाया
फूल उबाल के रंग बनाया!
रंग की बूंदे पड़ीं जब अंग पर,
और वह मेरे मन को भाया!

फाग में जैसे मिश्री घोली ,होली में
होली में पी की होली में, होली में!
सारे संगी साथी बुलाए,
सब मिल फाग कबीरा गाएं!

बोल कुबोल सुनाएं ,
ऐसे लाज शर्म से हम मर जाएं!

आई हुरयारों की टोली होली में,
होली में पी की होली में, होली में!

इतना रंग अबीर उड़ा है,
घर गलियन में कीच मचा है!

कब तक बचती ,कब तक छुपती,
प्रेम के रंग से कौन बचा है!

लगता है जाएगी डोली होली में,
होली में पी की होली में, होली में!
रंग डारी चुनरी-चोली होली में!

देखें जरा पास जाकर

बंद खिड़की दरवाजों से कहीं!
रोशनी की किरण छन कर आती!
उम्मीद जगा देती!
हर रात के बाद सुबह है आती!
सुबह के साथ सुनहरा उजाला!
उजली धरती फिर हर्ष से भर जाती!
आत्मा दृष्टि को लालायित!
परम ज्योति की उजास !
आत्मा के पंख उड़ने को आतुर!
देखना चाहे नवल प्रकाश!
मानस मन करता है!
बाहर निकल कर प्रकृति
की हरी भरी वादियों में
खुले आकाश के नीचे!
कारे कजरारे बादलों की,
धनक धुन सुनकर,
चमकती बिजली की द्रुत गति!
बजते हुए नगाड़े की ध्वनि पर!
नर्तन करती दामिनी!
झंकृत करती आभूषण की लौ!
प्रकाशित करती अवनी और अंबर को!
देखें जरा पास जाकर!
प्रकाशित उस धरती को!
चमक उठे श्रम के मोती!
पसीना बन नभ गिरते!
मोती के कण कण को!
पकड़ ले अपनी हथेलियां में!

उन मोती की बूंदो को!
छप्पर छानी पर सरगम बिखेरती,
इस बरखा रानी को!
प्रकृति की महारानी को!

पाला

हर फूल बने माला जरूरी तो नहीं है,
हर शीत में हो पाला जरूरी तो नहीं है!

पड़ता है जब फसल पर रोता किसान है!
पड़ता है जब अक्ल पर तो बिगड़ता इंसान है!

पाला भी बदल लेते हैं नेता जो है बड़े
है आज यहाँ कल वहाँ दिखते खड़े-खड़े!

पाला पड़ा जो दिल से तो महसूस ये हुआ,
चक्कर में इसके जो पड़ा है जिंदगी जुआ!

रुकने से रुक भी जाती है अपनी प्रगति अक्सर,
पाले में अपने रहना यूं तो अच्छा है मगर!

पाले के साथ ओला भी आता है जब कभी,
ये दोहरी मार झेलें कैसे सोचते सभी!

पाले से भरे भरे पल तो हैं शोभा भी है न्यारी,
पाले से रहे बच के यही सोचते है सभी
पाले से फिर भी पाला तो पड़ता है, कभी-कभी!

शाश्वत

सब अगर नश्वर तो शाश्वत कौन है!

शब्द है शाश्वत कि शाश्वत मौन है!

प्रश्न नश्वर है ,और उत्तर
गीत नश्वर है ,और प्रीत नश्वर!

भाव भाषा और ये स्वर,
ढूंढ कर हारे कि रहता कौन है!

सब अगर नश्वर तो शाश्वत कौन है!

सब न थे जब कौन था तब,
जो नहीं है , है भी क्या अब,
क्या अधूरा पूर्ण था तब!

है धरा खामोश चुप सा व्योम है!
सब अगर नश्वर तो शाश्वत कौन है!

शाश्वत बस है नेति नेति,
सब में जलती जिसकी ज्योति!

एक वही आदि और इति,
वही हलाहल वही तो सोम है!

सब अगर नश्वर तो शाश्वत कौन है!
शब्द है शाश्वत कि शाश्वत मौन है!

अलाव में हथेलियां जला बैठे

सर्दी के डर से इसके पास जा बैठे,
अलाव में हथेलियां जला बैठे।

सोचा था कल्पवृक्ष है कुछ देगा ही,
जो भी था पास में गंवा बैठे।

मंजिल की जुस्तजू में है कश्ती अपनी,
जाने अब किस तरफ हवा बैठे।

जिंदगी बीती सही पर सुर ना मिला,

साथ में कितने हमनवा बैठे।

वो तो आया नहीं मनाने को,
देर से कितने हम खफा बैठे।

उस पर बीतेगी क्या वही जाने,
दो घड़ी हम जो मुस्कुरा बैठे।

साधना देख जमाने की फितरत,

* * * *

शहर समता
शहर समता
शहर समता

शहर समता - ब्यूरो प्रमुख

देहरादून ब्यूरो - निशा अतुल्य,
सतना ब्यूरो - डॉ ऊषा सक्सेना,
रीवां ब्यूरो - साधना तिवारी,
लखनऊ ब्यूरो - मंजु सक्सेना,
जबलपुर ब्यूरो - शैली सेठ,
लुधियाना ब्यूरो - श्रद्धा शुक्ला,
जौनपुर ब्यूरो - डॉ मधु पाठक,
हैदराबाद ब्यूरो -रीना प्रदीप कुमार,
भिलाई ब्यूरो - संध्या चंदेल,
गोरखपुर ब्यूरो - चित्रा श्रीवास्तव,
दिल्ली ब्यूरो - अफरोज़ अजीज,
तिनसुकिया गोलाघाट ब्यूरो - रंजना बिनानी,
प्रयागराज ब्यूरो - डॉ आकांक्षा पाल,
भीलवाड़ा ब्यूरो - डॉ राजमति पोखरना,
इंदौर ब्यूरो - आशा जाकड़,
शिलांग ब्यूरो - डॉ अनीता पंडा,
बिलासपुर ब्यूरो - स्मृति मिश्रा 'रीति,
रायपुर ब्यूरो - सीमा निगम,
कानपुर ब्यूरो - सीमा वर्णिका,
भोपाल ब्यूरो - दीपमाला तिवारी,
दमोह ब्यूरो- भावना शिवहरे,
मण्डला ब्यूरो - डॉ अर्चना जैन
बनारस ब्यूरो - सुनीता जौहरी,
आरा ब्यूरो - सिम्पल सिंह,
बिजनौर ब्यूरो - ऋतुबाला रस्तोगी,
पठानकोट ब्यूरो - क्षमा लाल गुप्ता,
सप्तरी नेपाल ब्यूरो - करुणा झा,
धम्तरी ब्यूरो - कामिनी कौशिक,
रामपुर ब्यूरो - चंद्रिका कुमार 'चांदनी',,
मुरादाबाद ब्यूरो - अभिव्यक्ति सिन्हा,
कटनी ब्यूरो - मीरा भार्गव,
पटना ब्यूरो - अंजू भारती

संस्थापक
स्व0 कन्हैया लाल, स्व0 साधना श्रीवास्तव

सम्पादक
उमेश चन्द्र श्रीवास्तव
आरएनआई नं0 UPHIN/2001/3996

उप संपादक
डा0 अरूण कुमार मिश्रा
रचना सक्सेना

Mo. 9005239332 Email-shaharsamta@gmail.com

स्वत्वाधिकारी/मुद्रक/प्रकाशक/सम्पादक उमेश चन्द्र श्रीवास्तव द्वारा इण्डियन प्रेस (पलि.) प्रा0लि0, 36 पन्ना लाल रोड, इलाहाबाद से मुद्रित कराकर 289/238ए, (अनन्त भवन) कर्नलगंज, इलाहाबाद से प्रकाशित।

इस अंक के प्रकाशित समस्त समाचारों के चयन एवं सम्पादन हेतु पी.आर.बी. एक्ट के अन्तर्गत उत्तरदायी तथा समस्त विवादों का निपटारा इलाहाबाद न्यायालय में ही होगा।